गुरुमाई चिद्विलासानन्द पर अभिव्यक्तियाँ

मेरी गुप्त अभिलाषा

स्वामी ईश्वरानन्द द्वारा

सन् १९९१ में जापान में, श्री गुरुमाई की दूसरी शिक्षण यात्रा पर मुझे प्राचीन आध्यात्मिक राजधानी क्योटो और उसके आसपास के कई बौद्धमन्दिरों में श्री गुरुमाई और सिद्धयोगियों के एक समूह के साथ जानेका अवसर मिला। सन् १९७० के आरम्भ में, मैंने अपनी आध्यात्मिक यात्रा इनमें से एक मन्दिर में ही शुरू की थी और मैं अपनी गुरु, श्री गुरुमाई के साथ इन मन्दिरों में दोबारा जाने के लिए उत्साहित था।

प्रत्येक मन्दिर में श्री गुरुमाई ने, उस मन्दिर के मूल आचार और अभ्यासों के बारे में पूछा और बहुत सम्मान से हर स्थान की परम्पराओं का मान रखा। एक मन्दिर की उल्लासपूर्ण प्रथा के अनुसार, हमने प्रसन्नता और महान आनन्द के साथ द्वार पर स्थित भगवान बुद्ध की पत्थर की प्रतिमाओं पर पानी डाला। दूसरे मन्दिर के मध्य में स्थित भगवान बुद्ध के चारों ओर हमने प्रदक्षिणा की और उन्हें भेंट अर्पित कीं। अन्य मन्दिरों में हमने शान्त बैठ कर ध्यान किया या सिद्धयोग मन्त्र का जप किया। श्री गुरुमाई को खुले हृदय से प्राचीन संस्कृति की खोज करते हुए और हमारी आध्यात्मिक उन्नति के लिए प्रश्न पूछते हुए देखना मुझे बहुत अच्छा लग रहा था।

जापान के अपने चार साल के आवास के दौरान जो मन्दिर मुझे बहुत प्रिय था हम वहाँ गए। वहाँ भगवान बुद्ध की बड़ी-बड़ी मूर्तियाँ थीं। श्री गुरुमाई मौन रूप से एक मूर्ति को थोड़ी देर देखती रहीं और फ़िर उन्होंने प्रमुख पादरी से कहा, "ये बुद्ध अन्यों से भिन्न हैं।"

"कैसे?",पुजारी ने पूछा।

श्री गुरुमाई ने समझाया कि अन्य सभी बुद्ध सीधे बैठे हुए थे, किन्तु ये बुद्ध आगे की ओर झुके हुए प्रतीत हो रहे थे, बस ज़रा-सा। पुजारी ने श्री गुरुमाई के प्रत्यक्ष ज्ञान को स्वीकार करते हुए कहा , " हाँ, यह सच है। इन विशिष्ट बुद्ध ने मानवजाति के उत्थान के लिए संसार में बार-बार वापस आने का प्रण लिया, इसलिए वे सब की प्रार्थना सुनने के लिए आगे झुक कर बैठते हैं।"

भगवान बुद्ध के इस सूक्ष्म भाव को देखने की श्री गुरुमाई की क्षमता से मैं अचम्भित था, और यह सोच रहा था कि अतीत में इस मन्दिर में इतनी बार आने पर भी भगवान बुद्ध के झुक कर बैठने वाले इस आसन को मैंने कैसे नहीं देखा।

स्पष्ट और सूक्ष्म रूप से देखने पर ऐसा लगा कि यह श्री गुरुमाई द्वारा दी गई एक सिखावनी थी जो इस यात्रा के दौरान अद्भुत तरीके से प्रकट होनी आरम्भ हो गई थी। इसके बाद, बड़े सम्मान और प्रसन्नता का अनुभव करते हुए, डाइटोकूजी के एतिहासिक मन्दिर में, जहाँ पूर्वकाल में मैंने शिक्षा ग्रहण की थी, श्री गुरुमाई और अपने समूह का मार्गदर्शन किया। आज, डइटोकूजी के परिसर में बड़े और छोटे कई मन्दिर हैं। जब हम प्राचीनतम मन्दिरों में से एक में पहुँच कर उसके सुन्दरे बगीचों को देख रहे थे तब वहाँ के मुख्य पुजारी ने हमें चाय पर आमन्त्रित किया। वे एक प्रसिद्ध संन्यासी थे, नैशनल टेलिविज़न पर भी आ चुके थे और अपने हास्यप्रद स्वभाव के लिए भली-भाँति जाने जाते थे। शायद उनके इस हास्यप्रद स्वभाव के कारण ही आगे का घटनाक्रम हुआ।

जब हम चाय के लिए कमरे में बैठे, तब मैंने श्री गुरुमाई की पुस्तकों में से एक पुस्तक उन पुजारी को दी। फ़िर उन्होंने अंग्रेज़ी में मुझसे पूछा कि क्या इस समूह का मुखिया मैं था। मैं "नहीं " कहने ही वाला था जब श्री गुरुमाई हँसने लगीं और उन्होंने हाथ के संकेत से तथा सिर हिला कर कहा हाँ, मैं ही इस समूह का मुखिया था।

संन्यासी ने पुस्तक के कवर पर वह तस्वीर देखी जिसमें श्री गुरुमाई के बाल नहीं थे,और फ़िर श्री गुरुमाई की ओर देखा, उस समय उनके बाल लम्बे थे। उसके बाद उन्होंने मेरी ओर देखा, मैं तो पूरी तरह से गँजा था, और पुनः श्री गुरुमाई की ओर देखा। एक बार फिर

से उन्होंने पुस्तक में फ़ोटो देखी, और उनके चहरे पर एक बड़ी-सी मुस्कान खिल उठी। बहुत मधुरता से फिर उन्होंने इम सबको चाय पिलाई।

मैं कभी-कभी चुपके से श्री गुरुमाई की ओर देखता। वे वहाँ मौन बैठी थीं, प्रशान्ति और "विशुद्धशून्यता" का सगुण स्वरूप जिसे ज़ेन परम्परा में महान प्राप्ति माना जाता है। वह स्वरूप और अनुभूति आज भी मेरे साथ है।

यद्यपि चाय के समय श्री गुरुमाई शान्त थीं, मुझे यह अनुभव हो रहा था कि उनके कृत्यों की शक्ति मुझे सम्बल प्रदान कर रही थी। जब मैं समूह की ओर से, ध्यान के विषय में पुजारी से बात कर रहा था तब बाबा जी और श्री गुरुमाई से अध्ययन द्वारा इतने वर्षों में मैंने जो सीखा है उसके लिए मैं उनके प्रति अनन्त कृतज्ञता का अनुभव कर रहा था।

जब जाने का समय आया तब पुजारी ने हमें विदा किया। जब हम बगीचे के रास्ते से द्वार की ओर जा रहे थे तब मन्दिर की घण्टियाँ बजने लगीं। हमने देखा कि मुख्य पुजारी पोर्च पर थे, स्वयं ही घण्टियाँ बजाते हुए, हँसते हुए और हाथ हिला कर हमें यात्रा की शुभ कामनाएँ देते हुए। इन सब से ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे वे श्री गुरुमाई से कह रहे हों, "अहा, मैंने आपको पहचान लिया और मैं आपके साथ बहुत आनन्दित हुआ। आने के लिए धन्यवाद।"

जो कुछ अभी-अभी हुआ, मैंने जब उस पर मनन किया तब मुझे याद आया कि ज़ेन साहित्य, गुरुओं की ऐसी भेंट के किस्सों से सम्पन्न है, जहाँ शब्दों के बिना ही, अपरम्परागत तरीकों से एक दूसरे के प्रति अभिस्वीकृति प्रकट कर दी जाती है। उस दिन मैंने स्वयं देखा कि श्री गुरुमाई कितनी सरलता से इस परम्परा में प्रवेश कर गईं और पूर्ण सामंजस्य के साथ उसमें बह गईं।

दिन अभी समाप्त नहीं हुआ था। चाय के हमारे अनुभव के बाद, श्री गुरुमाई ने मुझसे कहा कि मैं उन्हें उस मन्दिर में ले चलूँ जहाँ मेरे पुराने शिक्षक रहते थे। मैंने श्री गुरुमाई से कहा कि वे ख़राब स्वास्थ्य के कारण हमसे नहीं मिल सकेंगे, तो कदाचित वहाँ जाने का कोई कारण नहीं था।

मेरे शब्दों को अनसुना कर, श्री गुरुमाई ने सीधे उस मन्दिर की ओर चलना आरम्भ कर दिया। जब हम मन्दिर के द्वार पर पहुँचे, तब सहकर्ता ने बताया कि पुजारी जी के जीवन का कुछ समय ही शेष है और दुर्भाग्यवश वे अतिथियों से नहीं मिल सकेंगे। श्री गुरुमाई ने उसे समझाया कि वह उनके लिए एक भेंट भेजना चाहती हैं और हमारे साथ उपस्थित एक सेवाकर्ता से शॉल लाने के लिए कहा। यह सुन कर मेरे रोंगटे खड़े हो गए। वर्षों से मेरी यह इच्छा थी कि जिन शिक्षक ने मुझे आध्यात्मिक पथ पर अग्रसर किया है, मैं जापान जाकर उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने हेतु उन्हें एक सुन्दर, जामुनी रंग की पश्मीना शॉल भेंट करूँ।

सेवाकर्ता जब वापस आइ-तो उनके हाथ में तीन पश्मीना शॉल थीं—एक श्वेत, एक श्याम और एक जामुनी रंग की। श्री गुरुमाई कुछ क्षणों तक मौन रूप से शॉल की ओर देखती रहीं। फ़िर उन्होंने जामुनी शॉल उठाई और अपने आशीषों के साथ, उनके लिए भेज दी ।

मैं बहुत प्रसन्न था कि मेरे पिछले शिक्षक को अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में एक सिद्ध के आशीर्वाद प्राप्त हो रहे हैं। निस्सन्देह मैं विस्मित हो रहा था कि श्री गुरुमाई कैसे जानती थीं —मेरी गुप्त अभिलाषा के बारे में, जिन पुजारी ने हमें चाय पिलाई उनकी विनोदप्रियता के बारे में, उन भगवान बुद्ध के बारे में जो आगे की ओर थोड़े से झुके हुए थे, सबकी प्रार्थनाओं को सुनने के लिए। मेरे लिए, इन सब घटनाओं को जोड़ने वाला एक अदृश्य सूत्र था।

और् फिर मुझे समझ में आ गया। वह सूत्र था मौन । आन्तरिक मौन और खुलेपन के स्थान से श्री गुरुमाई सुनती हैं। वे उस क्षण की आवश्यकता को सुनती हैं। वे दूसरों के हृदय को सुनती हैं। आन्तरिक शान्ति और खुलेपन के स्थान से, श्री गुरुमाई सर्वज्ञ शक्ति, वह दिव्य शक्ति जो सभी में विद्यमान है, उसकी प्रेरणा को सुनती हैं। इस प्रकार उनके कार्य सदैव महान प्रज्ञान के अनुरूप ही होते हैं।

मन्दिरों की यात्राएं बहुत स्वाभाविक रूप से उद्घाटित हुईं। और जब मैंने दिन के अन्त में पुनरावलोकन किया, तब मैं यह देख पा रहा था कि वे सब एक नदी की भाँति बह रहे थे।

प्राचीन बौद्ध साहित्य कहता है, कि एक बुद्ध, "वह जो जाग्रतावस्था में स्थित हैं", अपने हर कृत्य और भाव के द्वारा सिखावनियाँ प्रदान करते हैं। श्री गुरुमाई के साथ क्योटो के प्राचीन मन्दिरों की यात्रा में, मैंने उनके शब्दों, कृत्यों और आन्तरिक प्रशान्ति में परमोच्च ज्ञान की अनुभूति की, और इसने मुझे इस संसार में होने के एक नए तरीके के प्रति जाग्रत कर दिया।

© २०१४ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।